“इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त वृद्ध-जीवन”

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय ,विजयपुर

पी-एच. डी. उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रस्ताव की रूपरेखा

सत्र

2021-2022

शोधार्थी

मंजुला अशोक बिसनाल

पंजीयन संख्या : KSAWUV/Ph.D/517/2020-21

शोध-निर्देशक

डॉ. अमरनाथ प्रजापति

सहायक प्राध्यापक

विभागाध्यक्ष

डॉ. नामदेव एम. गौडा

प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय ,विजयपुर

प्रस्तावना :

मनुष्य के जीवन में कुछ प्रमुख चरण आते हैं- शैशवावस्था, बालावस्था, किशोरावस्था, और वृद्धावस्था। मनुष्य इन चरणों में कई तरह के पहलू से गुजरता है। मानव अपने जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन सभी समस्या के माध्यम से अनेक अनुभवों को प्राप्त करता है और इन्हीं अनुभव के सहारे ही जीवन जीता है। खास तौर पर इन्हीं अनुभव के साथ वृद्ध लोग अपने और आपने आस पास के लोगों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। यह अनुभव ही वृद्ध लोगों की संपत्ति की तरह रह जाता है। समाज में हम वृद्ध लोगों के रहन - सहन और उनका जीवन किस प्रकार जीते हैं यह सब देखते हैं। कुछ प्रमुख विद्वानों ने इन वृद्ध जीवन को साहित्य में एकत्रित करने का प्रयास किया है। वृद्धों के जीवन पर कई उपन्यास, कहानियाँ और कविताए रची गई है। अनेक रचनाकारों ने कई दृष्टिकोण के माध्यम से अपने रचनाओं में वृद्ध जीवन को अभिव्यक्त किए हैं।

वृहत हिंदी कोष के अनुसार विमर्श का अर्थ विचार, विवेचन, समीक्षा, तर्क, ज्ञान, चरम बिंदु आदि है। मनुष्य की वृद्धावस्था साठ -पैंसठ वर्ष के बाद आरंभ होता है। यह नियम वैज्ञानिक हो सकता है सामाजिक नहीं। कई ऐसे परिस्थितियाँ देखी जाती है कि युवा जैसी उत्साह वृद्धों में भी देखने के लिए मिलता है। सामान्यतः हम कह सकते हैं कि विमर्श जो है किसी भी विषय को संपूर्ण रूप से समझने के लिए सहायक है। अनेक दृष्टियों के माध्यम से विषय का मूल्यांकन करने में महत्वपूर्ण है । विमर्श उसे भी कह सकते है जो विविध मूल्यों से तथ्यों का संग्रहण करके एक विषय के गुण दोषों को परीक्षण करने के लिए सहायक है।

साहित्य में वृद्ध जीवन की अभिव्यक्ति

हिंदी साहित्य में अनेक विषयों पर विमर्श किया गया है। अनेक लेखकों ने अपने साहित्य में अपने विचारों को प्रकट किए हैं। कई ऐसे रचनाकार हैं जो वृद्ध जीवन के विविध पहलुओं को अपने ही अंदाज से रचनाओं में अभिव्यक्त किए हैं। प्राचीन और मध्यकलीन साहित्य वृद्ध विमर्श से भरा पड़ा है और इनके प्रति समाज श्रद्ध का भाव रहा है। समाज वृद्ध लोगों को समझता है और उनके अनुभव का सदुपयोग करता है। भारतीय संस्कृति में उनका महत्वपूर्ण स्थान था। किंतु आधुनिकता के प्रभाव से वृद्ध अनाधार होने लगा और उन्हें अनेक समस्याओं को झेलना पड़ा। आज कल नई पीढ़ी इन्हें बोझ समझने लगा है। वृद्ध अपने ही परिवार में नौकर की तरह रह रहे है।

आज के वर्तमान युग में साहित्य के क्षेत्र में दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, बाल विमर्श आदि की तरह वृद्ध विमर्श भी अपना प्रमुख अस्तित्व स्थापित किया है। हिंदी कहानी की यात्रा सौ वर्ष पार कर चुकी है। इनमें वृद्धजन की जीवन को व्यक्त करने वाले अनेक कहानियाँ लिखे गए हैं। इनमें वृद्ध विमर्श से जुड़ी कई कहानियाँ है जो प्रमुख रूप से,प्रेमचन्द द्वारा रचित 'बूढ़ी काकी' और भीष्म साहनी की प्रसिद्ध कहानी 'चीफ की दावत' यह दोनों कहानियाँ वृद्ध जीवन को दर्शाता है। वर्तमान कहानी क्षेत्र में प्रसिद्ध लेखिका सुधा अरोड़ की 'दहलीज पर संवाद' और 'उघड़ा हुआ स्वेटर' ऐसी कहानियाँ हैं जो वृद्धों की स्थिति पर गहन विचार करती है। साथ ही आज की परिवर्तनशील समाज में पारिवारिक विश्रृंखलता को मन्नू भंडारी की कहानी 'अकेली' एवम ऊषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' में वृद्ध लोगों की समस्या की संवेदना को पूरी सूक्ष्म रूप से दिखाया गया है।

इस औद्योगीकरण जगत में समाज पर जो आधुनिकता का प्रभाव पड़ रहा है यह प्रभाव संबंधों को बिखरा दिया है पहले जिस समाज में वृद्धजनों को सम्मान भाव से देखा जाता था आज उसी समाज ने उन्हीं वृद्ध लोगों को सिर्फ बेबस और लाचार बताए जा रहा है। इसी बदलते परिस्थिति में वृद्ध लोगों की

जीवन को कुछ प्रमुख लेखकों ने उपन्यास के क्षेत्र में भी अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। प्रमुख लेखकों ने कुछ ऐसे सूक्ष्म अंशों को एकत्रित करने का प्रयास किया है जो युवा पीढ़ी को अपने कर्तव्यों को सोचने पर मजबूर करता है । साहित्य में उपन्यास का क्षेत्र बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है इसलिए कई रचनाकारों ने वृद्ध जीवन को अभिव्यक्त करने के लिए उपन्यास को अपनाया है।यह उपन्यास युवा पीढ़ी पर गहरा प्रभाव डाला है।

प्राचीनकाल में जो वैदिक युग था वहाँ से लेकर जो आज के आधुनिक काल तक वृद्धजन को अत्यंत सम्मान भाव से देखा जाता रहा है।'रामायण' में महाराज दशरथ, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महाराज जनक, आदि सभी वृद्ध पात्र ही है लेकिन इन सबने जो कार्य किये हैं वे सब वस्तुतः प्रशंसनीय है। रामायण में वृद्धा शबरी की भक्ति भावना सर्वथा महान है। इसी प्रकार 'महाभारत' में भी वृद्ध धृतराष्ट्र का चरित्र अपनी विरल विशेषता रखता है।अन्य पात्र मैं द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, भीष्म पितामह आदि वृद्ध पात्र ही हैं जिन्होंने महाभारत के संग्राम में अद्भुत वीरता का प्रदर्शन किया था। रामायण और महाभारत काल में वृद्ध लोगों का विशेष स्थान था। आधुनिक काल में बहादुर शाह जाफर, कुवर सिंह, महात्मागांधी, लोकमान्य तिलक, अरविन्द घोष, दयानंद सरस्वती, मदर टेरेसा आदि वृद्धों ने भी देश की सेवा जिस उत्साह के सात की है उसे भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। समाज के लिए इन महान व्यक्तियों ने जो योगदान दिया है यह युवा पीढ़ी के लिए आज भी आदर्श रूप में काम कर रहा हैं।

आज के वर्तमान युग में प्राचीन काल की तरह कइ उपन्यासों में वृद्ध जीवन को एकत्रित करके अभिव्यक्त का प्रयास किया गया है। साहित्यिक क्षेत्र में अलग व्यक्तित्व के माध्यम से महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले काशीनाथ सिंह द्वारा रचित ' 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में परंपरागत मूल्यों और संस्कारों के बंधन में जूझता हुआ वृद्ध को दर्शाया गया है। इस उपन्यास में रघुनाथ नामक व्यक्ति की जीवन को अत्यंत प्रभावकारी रूप से अभिव्यक्त किया है। रघुनाथ अपने सम्पूर्ण जीवन को बच्चों के देखभाल में व्यक्त करने के बावजूद उसे बच्चो से दर्द ही प्राप्त होता है। रघुनाथ को बुढ़ापा में कई सारे समस्याओं का सामना करना पड़ता है उस समय उसके साथ उसके बच्चें ने भी नहीं देते हैं। यहाँ तक कि रघुनाथ

की पत्नी भी उसका साथ नहीं देती है। रघुनाथ की बहु ही एक ऐसी पात्र है जो अंत तक रघुनाथ के साथ रहती है।रघुनाथ अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक अपने बच्चों के बारे में ही सोचता रहता है। यह उपन्यास वृद्ध जीवन से संबंधित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है।

साहित्यिक और सामाजिक रूप से अपना ही अलग छाप छोड़ने वाली चित्रा मुद्गल एक महान लेखिका के रूप में जानी जाती हैं। चित्रा मुदगल जनीतिक विषयों को भी अपने रचनाओं में समाहित किया है। चित्रा मुद्गल द्वारा लिखा गया उपन्यास 'गिलिगडु' चक्रधर सम्मान से सम्मानित है। इस उपन्यास में दो ऐसे पात्र हैं जो अपनी सेवा सें निवृत्त हुए हैं। एक नाम जसवन्तसिंह रिटायर्ड सिविल इंजीनियर हैं और दूसरे वृद्ध का नाम कर्नल विष्णु नारायण स्वामी है। जब जसवन्त सिंह अपने बेटे और बहू के साथ रहने के लिए दिल्ली आए तो आप उन्हें सिर्फ तिरस्कार ही प्राप्त होता है। इसी संदर्भ में जसवंत सिंह का एक मित्र बन जाता है उन्हीं का नाम स्वामी है जो रिटायर्ड कर्नल हैं। करना स्वामी जसवन्त सिंह से बात करते समय अपने पोतियों को गिलिगडु कहकर बुलाता है। उसने गिलिगडु का अर्थ चिड़िया कहा था यहीं से जसवंत सिंह को स्वामी की संयुक्त परिवार देखने का लालसा हुई। इन्हीं के साथ रहते ही उन्हें जीवन जीने का और खुश रहने का पता चलता है।जसवंत सिंह को बेटे और बहू से सिर्फ दर्द ही मिलता है। कर्नल स्वामी जसवंत सिंह के जीवन में प्रेरणा की तरह काम किए हैं। जब कर्नल स्वामी का मृत्यु हो जाता है तो जसवन्त सिंह अपनी इच्छा के अनुसार अपनी सम्पत्ति को नौकरानी सुनगुनिया के नाम कर दिया और अन्तिम जीवन को उसके बेटी कुमुदिनी और कात्यायनी साथ बिताना चाहते हैं।इस उपन्यास के माध्यम से चित्रा मुद्गल वृद्ध जीवन की त्रासदी को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

कृष्णा सोबती ने हिंदी साहित्य क्षेत्र में अपना प्रमुख योगदान दिया है। कृष्णा सोबती द्वारा रचित उपन्यास का नाम 'समय सरगम' है।'समय सरगम' उपन्यास मे आरण्या नामक मुख्य पात्र के माध्यम से बढ़ती उम्र के साथ किस तरह जीना चाहिए इसका अभिव्यक्त किया गया है। अरण्य के माध्यम से भारतीय परिवार व्यवस्था का चित्र दिया है। इस प्रयास में आयु को जीवन जीने पर प्रभाव पड़ने नहीं

दिया। इस उपन्यास के आरण्या अकेले रहने के बावजूद भी अपने हम उम्र के मित्रों के माध्यम से अकेलेपन का महसूस नहीं होता है। इस उपन्यास मे उम्र होने पर भी जीवन को किस प्रकार आनंद से बिताना चाहिए उसी को व्यक्त किया गया है।

ममता कालिया द्वारा रचित 'दौड़' उपन्यास में माँ बेटे की संबंधों को दर्शाया गया है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र का नाम पवन है।आधुनिकता के प्रभाव के कारण शिक्षित होते हुए भी माँ बाप के प्रति अपना कर्तव्य को किस प्रकार भूला जा रहा है इसका अभिव्यक्त इस उपन्यास में हुआ है। ममता कालिया ने रेखा और राकेश नामक पात्रों के माध्यम से आज के माता - पिता के समस्याओं को अभिव्यक्त किया । निर्मल वर्मा द्वारा रचित 'अंतिम अरण्य' उपन्यास में भी वृद्ध जीवन को अभिव्यक्त किया है। इसी प्रकार देवेश ठाकुर 'संध्या छाया', हृदयेश 'चार दरवेश', गोविन्द मिश्र 'शाम की झिलमिल' और गीतांजलि श्री द्वारा रचित 'रेत समाधि' आदी उपन्यासों में वृद्ध जीवन का अभिव्यक्त हुआ है ।

प्रस्तावित शोध का महत्व:

हम जिस समाज में जीवन निर्वहन कर रहे हैं वहाँ पर कई प्रकार के लोगों को देख सकते हैं। समाज में युवावस्था के लोग, मध्य अवस्था के लोग और वृद्धावस्था के भी लोग रहते हैं। इन सभी अवस्था के लोगों को अनेक साहित्यकार अपनी रचनाओं में बाँधने का प्रयास किया है। आजकल उपन्यासों में और अन्य गद्य विधवाओं में वृद्ध जीवन को अभिव्यक्त किया गया है। वृद्धावस्था मनुष्य जीवन का वह चरण है जब मानव अपने संपूर्ण कर्तव्य से मुक्त होकर अपने बच्चे और पोते - पोतियों के साथ सुखद जीवन यापन करने की आशा करता है। लेकिन आज के औद्योगिकीकरण के प्रभाव में माँ बाप के प्रति सिर्फ अनाधार ही व्यक्त हो रहा है। जिसे माता-पिता ने अपने खून पसीना एक करके, वह खुद भूखे पेट रहकर अपने बच्चों को खाना खिलाया था कि बच्चे ही अपने भविष्य है। जीवन के अंतिम दिनों में बच्चे उन बूढ़े माँ बाप के सहारा बनेंगे यह सभी माता-पिता की आशा रहती है लेकिन इस आधुनिकता के कारण यह आशा वह वृद्ध लोगो की निराशा ही रह गई है।

आधुनिक युग की ओर आकर्षित होकर युवा पीढ़ियां अपने माता-पिता को बोझ समझ रहे हैं। वह माता पिता अपने परिस्थितियों के कारण अपने ही घर में नौकर की तरह रह रहे हैं। साहित्य को समाज में होने वाली गतिविधियों को दर्शाने का माध्यम बनाया जा रहा है। समाज में घटित प्रमुख घटनाओं को कई लेखकों ने अपने रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करने की कोशिश की ताकि युवा

पीढ़ी में कुछ बदलाव ला सकें। लेखकों ने उन वृद्ध लोगों को अपने उपन्यासों में इस प्रकार व्यक्त किया है जो बहुत ही हृदय स्पर्शी है। कई ऐसे परिवार को लेखकों ने अपने रचनाओं में व्यक्त किया है कि वह वृद्ध लोग जो अपनी पूर्ण आयु अपने बच्चों के देखभाल में बिताया था आज उसे वृद्ध लोग को एक वक्त की खाना तक नहीं मिल रहा है। यह परिस्थिति केवल एक ही परिवार में नहीं है आज के आधुनिक संदर्भ में सभी परिवार में यह देखने के लिए मिलता है।

पहले जिसे संयुक्त परिवार में आनंद का वातावरण रहता था आज उस तरह का परिवार देखने के लिए विरल ही मिलता है। विभक्त परिवारों के कारण वृद्ध लोगों की ओर बढ़ रही अंकित अनाधार और तिरस्कार को उपन्यास में दिखाया गया है। जिस संपत्ति को परिवार को पालने के लिए व्यय किया था आज उन्हीं व्यक्तियों को युवा पीढ़ी स्वार्थ के कारण उनके साथ नौकर की तरह व्यवहार कर रहे हैं। आज के आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण पहले जैसा माता पिता भाई बहन सास-ससुर जैसे संबंधों का महत्व बिखरा पड़ा है। बदलते परिवेश के साथ युवापीढ़ी अपने कर्तव्य और जिम्मेदारी को भूलकर अपने क्षणिक सुखद जीवन के लिए वृद्ध लोगों का हाथ छोड़ रही है। लेखक अपने उपन्यासों में किस प्रकार पाश्चात्यकरण के प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है इन्हीं प्रमुख अंशों को बताने का प्रयास किया गया है।आज के आधुनिक समाज में अपने ऊंची दर्ज को बनाए रखने के लिए अपने अनपढ़ माँ बाप को अपनी ही माँ बाप बताने के लिए शर्म महसूस कर रहे ऐसे युवा पीढ़ी के प्रति के प्रति लेखकों ने बहुत ही कड़वा बातो को अपनी रचनाओं के माध्यम से बताया है।

शारीरिक कठिनाइयों को झेलते हुए भी वह वृद्ध लोग अपनी बच्चों के साथ जीवन बिताने की इच्छा प्रकट करते हैं लेकिन आज के युवा उन्हें कई दर्द देखकर उनकी मानसिकता को झकझोर दिया है। वृद्धजन किस - किस तरह के समस्याओं से और त्रासदियों से जीवन यापन करते हैं इस स्थिति को ही कई लेखेकों ने अपने रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। समाज में आज भी कुछ ऐसे परिवार भी देखे जाते हैं जिनमे वृद्ध लोगों को गौरव और सम्मान के साथ देखा जा रहा है परन्तु ऐसे परिवार कम

मात्रा में है। लेखकों ने बहुत ही गहनशीलता और तार्किकता के माध्यम से वृद्ध लोगों की समस्याओं को प्रकट करके उन्हीं समस्याओं का समाधान सोचने के लिए युवा पीढ़ी को जागरूक करते हैं। अतः मेरा शोध कार्य हिन्दी साहित्य में अत्यन्त ही नवीन और महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत शोध की रूपरेखा

प्रथम अध्याय

1) वृद्ध जीवन का दृष्टिकोण एंव विकास

1.1 वृद्ध विमर्श की अवधारण

1.2 वृद्ध की परिभाषा और स्वरुप

1.3 प्राचीन काल में वृद्ध जीवन

1.4 मध्यकाल में वृद्ध जीवन

1.5 आधुनिक काल में वृद्ध जीवन

द्वितीय अध्याय

2) वृद्ध जीवन का साहित्यिक स्वरुप

2.1 उपन्यासों में वृद्ध जीवन

2.2 कहानियों में वृद्ध जीवन

2.3 कविताओ में वृद्ध जीवन

2.4 दलित लेखन में वृद्ध जीवन

2.5 स्त्री लेखन में वृद्ध जीवन

तीसरा अध्याय

3) समाज में वृद्ध की स्थिति

3.1 ग्रामीण समाज

3.1.1 वृद्ध किसान

3.1.2 वृद्ध मजदूर

3.1.3 वृद्ध स्त्री

3.2 शहरी समाज

3.2.1 सेवानिवृत्त वृद्ध

3.2.2 विस्थापित वृद्ध

चौथा अध्याय

4) परिवार में वृद्ध की स्थिति

4.1 एकल परिवार

4.2 संयुक्त परिवार

4.3 नौकरी पेशा परिवार

4.4 ग्रामीण परिवार

4.5 शहरी परिवार

4.6 शिक्षित परिवार

4.7 अशिक्षित परिवार

पाँचवाँ अध्याय

5) उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची

1 चित्रा मुद्गल, गिलिगडु,सामयिक पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2019

2 कृष्णा सोबती,समय सरगम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2019

3 काशीनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017

4 रविन्द्र वर्मा, पत्थर ऊपर पानी,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2000

5 गोविंद मिश्र, शाम की झिलमिल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017

6 निर्मल वर्मा, अंतिम अरण्य,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2021

7 सूर्यबाला,अग्निपंखी,ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, संस्करण 2011

8 ममता कालिया,दौड़,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2021

9 अनामिका,तिनका तिनके पास,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2008

सहायक ग्रंथ सूची

1 संपादक: डॉ.दिलीप मेहरा, हिन्दी कथा साहित्य में वद्ध विमर्श, उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, संस्करण 2021

2 संपादक: डॉ.शगुफ़्ता नियाज़,अनुसंधान (त्रैमासिक शोध पत्रिक),अप्रैल-सितम्बर 2021 (संयुक्तांक),अलिगढ़

3 संपादक: डॉ. शिवचंद्र सिंह, साहित्येतिहास में वृद्ध विमर्श, दिशा इंटरनैशनल पब्लिशिंग हाउस ग्रेटर नोएडा,संस्करण 2017